शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की लोक कला सांझी

प्राप्तिः 10.06.2024
स्वीकृतः 27.06.2024

47

डॉ० हेमंत कुमार राय
पर्यवेक्षक

विनिता
शोधार्थी
ईमेल vinitabhati81@gmail.com

सारांश

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की लोक कला प्रमुख रूप से सांझी माई है। जो अभी भी प्रचलित है। सांझी माई समृद्धि, उत्थान और उन्नति का प्रतीक व मां भगवती का ही रूप माना गया है। श्रद्धालुओं के घरों में सांझी के रूप में नौ देवी, नौ दिनों तक निवास करती है। यह नौ दिन का सफर तालाब से शुरू होता है और तालाब पर ही खत्म हो जाता है। सांझी बनाने पूजने और विसर्जन की धार्मिक क्रियाएं उसी समय से शुरू की गई थी। जब सांझी माई के साथ तालाब का महत्व जुड़ा हुआ था।

मुख्य बिन्दू

सांझी, मातृशक्ति, लोक कला, देवी, पूजा, नवरात्रि।

सांझी का उद्भव

मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा की खुदाई में आदिकाल की जिन विविध सभ्यताओं के सांस्कृतिक पक्षों का उद्घाटन हुआ है उनसे यह बात प्रमाणित हो चुकी है, कि वैदिक सभ्यता के अर्भिभाव से कई शताब्दियों पूर्व हमारे देश में आदिशक्ति की पूजा का प्रचलन रहा है। जीवन के उद्गम और विकास का कोई अंग ऐसा नहीं है, जो मातृशक्ति द्वारा उद्भाषित नहीं हुआ हो। वह माता के रूप में मानव के उत्पादन और संवर्धन के लिए सदा से आवश्यक रही है। भारतीय दर्शन में आधा शक्ति प्रकृति है या यह प्रकृति की शक्ति है। इसी कारण शक्ति को जगत में प्रमुख स्थान दिया है। यही से मां की पूजा की परंपरा प्रारंभ हुई। आगे चलकर मातृशक्ति की आराधना, शक्ति पूजा के रूप में परिवर्तित होगा गई। शक्ति उपासना की परंपरा केवल भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में थी भारत ने तो मातृशक्ति को सर्वोपरि महत्वता दी है। इस शक्ति के अंतर्गत मुख्यतः दुर्गा, पार्वती पूजा के कई स्वरूप देखने को मिलते हैं। सांझी का एक रूप इसी भावना को पुष्ट करता हुआ पाया जाता है। यह पर्व सभी देशों में मुख्य रूप से मनाया जाता है। पश्चिमी उत्तरप्रदेश के मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर तथा आस–पड़ोस के ग्रामीण क्षेत्रों में सांझी अपूर्व हर्शोल्लास के साथ मनाई जाती है।

सांझी के उद्भव के संबंध में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती है। परंतु यह सभी जगह अपना विशेष स्थान रखती है। कहा जाता है कि पंद्रहवीं एवं सोलहवीं शताब्दी के लगभग वैष्णव मंदिरों के पुजारी के कला द्वारा जिस देवी–देवताओं का पूजन किया जाता था, वहीं वर्तमान में सांझी कला के रूप में विकसित हुई इसके साथ–साथ कुछ विद्वानों के द्वारा यह भी कहा जाता है कि भगवान कृष्ण ने शाम के समय राधा को प्रसन्न करने के लिए फूलों से बनी उनकी एक सुंदर छवि तैयार की थी जिसे सांझी का रूप संसार के सम्मुख आया इसीलिए सांझी को देवीय लीला की उत्पत्ति से संबंधित माना जाता है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की लोक कला प्रमुख रूप से सांझी माई है। जो अभी भी प्रचलित है। सांझी माई बनाने की लोक कला विलुप्त होती जा रही है। क्योंकि बाजारों में आधुनिक मूर्तियां बिक रही है। जो लोक कला को कम कर रही है। सांझी माई समृद्धि, उत्थान और उन्नति का प्रतीक व मां भगवती का ही रूप माना गया है। श्रद्धालुओं के घरों में सांझी के रूप में नौ देवी, नौ दिनों तक निवास करती है। यह नौ दिन का सफर तालाब से शुरू होता है और तालाब पर ही खत्म हो जाता है। सांझी बनाने पूजने और विसर्जन की धार्मिक क्रियाएं उसी समय से शुरू की गई थी। जब सांझी माई के साथ तालाब का महत्व जुड़ा हुआ था।

सांझी का महत्तव

सांझा–सांझी एक लोक पर्व है जो पितृ पक्ष के सोलह दिनों में सांझा पर्व और शारदीय नवरात्र के नौ दिनों में सांझी पर्व मनाया जाता है। सांझी पर्व देवी पूजा का प्रमुख पर्व है। यह भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन मास की अमावस्या तक मनाया जाता है।

कुंवारी कन्याएं इस पर्व में न केवल विशेष रूप से शामिल होती हैं बल्कि कहां जाता है कि यह त्यौहार कुंवारी कन्याओं का ही होता है। इस पर्व से जुड़े लोकगीतों में इन कन्याओं के भावी जीवन के लिए सुख समृद्धि एवं मंगल कामना का सुखद संदेश निहित है। मान्यता है की कुंवारी कन्याओं द्वारा यह त्यौहार मनाए जाने पर मां दुर्गा (सांझी) उन पर प्रसन्न होती है और उन्हें अच्छे वर के साथ–साथ धन संपत्ति एवं खुशहाली का वरदान देती है।

कुछ स्थानों पर यह भी मान्यता है की कुंवारी कन्याओं द्वारा सुयोग्य वर की प्राप्ति और सुखद वैवाहिक जीवन की मंगल कामना से सांगानेर की आदर्श कन्या मानी जाने वाली 'सजा' की स्मृति में सांझी व्रत किया जाता है। कुंवारी कन्याओं द्वारा यह पर्व मनाए जाने के संबंध में भगवान शिव और पार्वती से जुड़ा एक प्रसंग भी बहुत प्रचलित है। कहते हैं कि भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए पार्वती ने नौ दिनों तक व्रत रखे थे और इसे प्रसन्न होकर भगवान शिव ने दुर्गा स्वरूप पार्वती को पत्नी के रूप में स्वीकार किया। यही वजह है कि विशेष रूप से कुंवारी कन्या इस त्यौहार को मानती हैं।

नवरात्रि पर्व से पहले पितृपक्ष में गांव की महिलाएं तालाब पर जाकर वहां से मिट्टी खोदकर कर घर लाती है। घर में उसी मिट्टी से सांझी माई व उसके परिवार का निर्माण करती हैं। सबसे पहले उसे मिट्टी को भिगोती है तथा फिर उसमें थोड़ा सा गोबर व भूसा मिलकर उसकी लुगदी बनती है। फिर इस मिट्टी से सांझी तथा उसका परिवार सांझी का भाई, आकाश में उड़ते तोता, वन में नाचता

मोर, चांद–सूरज, चिड़िया, बाजे वाला, उल्टा चोर, पेटू ब्राह्मण, डुमनी, नाइन, बामणी, चाटवाला, सब्जी वाला, दर्जी, साबुन, कंघा, तारे, पर्स, जूते, चप्पल, डोला, आदि बनाकर सूखने के लिए रख देती है। जब वह सूख जाता है तो उसमें अमावस्या के दिन उसको लाल रंग, पीला रंग, व सफेद रंग से अलंकृत किया जाता है वैसे आजकल बाजार से रंगों को खरीद कर सभी रंगों का प्रयोग किया जाने लगा है। इसके बाद गोबर से दीवार पर चिपकाए जाता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार सांझी पर्व महिलाओं और कन्याओं के लिए होता है। कुछ विद्वान सांझी को पार्वती का रूप, कुछ दुर्गा का रूप, कुछ राधा का रूप मानते हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ लोग सांझी को देवी उमा एवं कात्यानी देवी के रूप में भी मानते हैं अर्थात यह भी कहा जा सकता है कि सांझी को एक देवी के रूप में पूजा जाता है वहीं कुछ अन्य विद्वानों के द्वारा यह माना जाता है कि कुछ कुमारियों के द्वारा पितृपक्ष में सोलह दिन हेतु सांझी बनाई जाती है। यह सांझी कन्याओं के सोलह वर्ष हेतु सोलह दिन के व्यक्त करने के साथ–साथ सोलह वर्श की कुमारियों के भिन्न–भिन्न नाम एवं रूपों को अभिव्यक्त भी करती हैं जिनमें से प्रथम वर्ष की कन्या का नाम ही संध्या माना जाता है जो सांझी कला का ही एक नाम है।

- संध्या
- सरस्वती
- त्रिद्धामूर्ति
- कालिका
- सुभधा
- उमा
- मालिनी
- कुबिजका
- कलसंदर्भ
- अपराजिता
- रुद्राणी
- भैरवी
- महालक्ष्मी
- क्षेत्रज्ञा
- अंबिका
- पीठनायिका

अमावस्या से अगले दिन से पहले नवरात्रि से सांझी माई की पूजा की तैयारी की जाती है। सुबह उठकर स्नान करने के बाद सांझी माई को पूजा जाता है तथा भोग लगाया जाता है फिर उसके बाद सूर्यास्त से पूर्व संजा तैयार कर ली जाती है सूर्यास्त के बाद आरती की तैयारी की जाती है। सभी महिलाएं व लड़कियां एक मिट्टी का दिया लेकर उसमें सरसों का तेल डालकर उसे

सांझी की आरती करती हैं तथा यह प्रक्रिया वह अपने घर तथा मोहल्ले में जाकर सभी घरों में करती है। उसके बाद में जोर–शोर से आरती व गीतों का अभिवादन करती है। यह प्रक्रिया में पूरे नौ दिनों तक करती हैं।

सांझी माई की आरती

आरता री आरता मेरी सांझी माई आरता
आरते के फूल है आरते की बाती
काहे का दीया काहे की बाती
माटी का दीया रुपे की बाती
सरसों का तेल जले सारी राती
क्या मेरी सांझी ओढ़ेगी? क्या मेरी सांझी पहरेगी?
चादर शालू ओढ़ेगी, सोने का शीश गुदावगी,
मिस्री गोला खावेगी, दूध का बेला पीलावेगी,
अपना वीर खिलावेगी
जाग सांझी जाग तेरे माथे लागे भाग,
तेरे दिल्ली शहर की बिहावन आए।
चेडमेड के जूता लाए सोलह चुंदर साथ लाए,
भरपट थाली लहंगा लाए।
नौ नवराते देवी के सोलह कनागत पितरों के,
खोल मेरे पितरों पाठ करो।
भैया भतीजे राज करो।
भैया है मेरे 120 भतीजा है मेरे 230
कड़वी कचरिया कड़वा तेल,पत्रों फेल्यो लंबी बेल।
आये कनागत पूरे मास ब्राह्मण कूदे नौ नौ बास,
गई कनागत रहेगी डंडी, ब्राह्मण मारे सिर में हांडी।
गोरा गोरा सांझी भईया गौरा
गौरी बहुरिया निक्के निक्के सुरमे वाली
दारजा किनारे वाली भावज है हमारी,
अड़क मड़क के जूते वाली भैया है हमारे।

नवरात्रि के नौ दिनों तक सांझी माई की पूजा करने के बाद दसवें दिन सांझी माता का विसर्जन किया जाता है। विसर्जन से पहले उनकी पूजा की जाती है तथा उनका भोग लगाया जाता है। इसके बाद सभी महिलाएं एवं कन्याएं एकत्रित होकर गीत गाकर उनको विदा करती है तथा उनका विसर्जन तालाब में करती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि यह प्रथा अभी भी चली आ रही है। कुछ स्थानों पर तो विशेष कर धूमधाम से पूजा अर्चना की जाती है।

उपयुक्त विधियों से अलंकरणात्मक संयोजन का अंकन किया जाता है। जो मानव की भावनाओं का अभिव्यक्तीकरण करती है एवं उनके कल्पनात्मक स्वरूपों के साथ–साथ ईश्वर के प्रति भावों को भी व्यक्त किया जाता है। अतः सांझी एक भावना प्रधान चित्रण है। जिसमें बालिकाओं के संस्कारित स्वरूप के साथ–साथ अन्य लोगों के द्वारा भी जीवन की समग्रता को विस्तृत रूप से व्यक्त किया गया है।

संदर्भ

1. वर्मा, डॉ. विमला. (1987). उत्तर प्रदेश की लोक कला. पृष्ठ **58 व 59.**
2. भानावात, डॉ० कहानी. (2007). सांझी कला. पृष्ठ **45.**
3. वर्मा, वंदना. (2008). भारतीय लोक कला एवं हस्तशिल्प वैभव. पृष्ठ **35, 36, 37, व 41.**
4. अग्रवाल, हेमलता. कुमारी, आकांक्षा. (2020). भारतीय लोक एवं आदिवासी कलाओं के विविध रूप. पृष्ठ **40, 41, व 42.**
5. https://w.w.w.amarujala.com.